Inspira- Journal of Modern Management & Entrepreneurship (JMME)
ISSN : 2231–167X (Print), Impact Factor: (Cosmos: 7.866 & I2OR: 5.675) Volume 16, No. 01(II), January-March, 2026, pp. 155-159

वैदिक सोम – तत्व की शास्त्रीय समीक्षा

डॉ. रेनू रानी शर्मा*

एसोसिएट प्रोफेसर, संस्कृत विभाग, गोस्वामी गणेशदत्त सनातन धर्म कॉलेज, पलवल, हरियाणा।

*Corresponding Author: renusharma1806@gmail.com

***Citation**: शर्मा, रेनू (2026). वैदिक सोम –तत्व की शास्त्रीय समीक्षा. Journal of Modern Management & Entrepreneurship, 16(01(II)), 155–159. https://doi.org/10.62823/JMME/16.01(II).9061*

सार

सोम पृथ्वी स्थानीय दैवीय शक्ति माने गये हैं। ऋग्वेद के नवम मण्डल में सभी सूत्तक सोम के प्रति ही समर्पित हैं । सोम एक विशेष प्रकार की लता में से निकाला जाने वाला, बलवर्धक व आनन्ददायक पेय था। सोमयागों का वैदिक कर्मकाण्डों में अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान है। इन योगों में दिन में तीन बार प्रातः, सायं व मध्याहान सोम का सवन करके वैदिक देवताओं का तदनुसार विभाजन करने के उपरान्त सोमपान के हेतु आमन्त्रित किया जाता था। वैदिक आर्य दूध एवं मधुमिश्रित सोम देवताओं को अर्पित करने के उपरान्त स्वयं पान करते थे।

***शब्दकोशः** दैवीय शक्ति, सोम, बलवर्धक व आनन्ददायक पेय, वैदिक कर्मकाण्ड, वैदिक सोम।*

प्रस्तावना

सोम से सम्बन्धित कुछ तथ्यों का विकास परवर्ती साहित्य में हुआ और इसे अन्ततः सौपर्णाख्यान कहा जाने लगा। संहिताओं में इससे सम्बन्धित विवरण इस प्रकार है –

ऋग्वेद

सेम यद्यपि उपस्थिति मूजवत् पर्वत पर है।[1] परन्तु सोम को दिव्य भी कहा गया है[2] तथा इसका वास परम व्योम में है,[3] जहाँ एक श्येन इसको पृथ्वी पर लाया । यह श्येन तीव्रगामी तथा सुन्दर पंखों से युक्त अर्थात सुपर्ण है।[4] मन के समान वेग वाले सुपर्ण ने एक लौहमय दुर्ग को भग्न किया और वे इन्द्र के लिए सोम को पृथ्वी पर लाए।[5] एक मन्त्र में कहा है कि सोम लौहपुरों के मध्य में सुरक्षित था किन्तु श्येन ने अपने वेग से सबको तोड़ दिया । श्येन ने जाकर इन्द्र के लिए मधुयुक्त अंश को तोड़ दिया और उसे पंजों में दबाकर पृथ्वी पर ले आये।[6] जब श्येन आकाश से सोम को ला रहा था कृशानुं नामक धर्नुधारी ने उस पर बाण चलाया जिससे उसका पंख कट गया।[7] एक मन्त्र में मातरिश्वा द्वारा वृष्टि करने तथा सोम द्वारा पृथ्वी पर लाने का साथ –साथ उल्लेख है।[8] ऋग्वेद में अन्य स्थलों पर भी सोम का सम्बन्ध जल अथवा वृष्टि से घनिष्ट रूप से जोड़ा गया है।[9] बलूमफील्ड इसी आधार पर आकाश से श्येन द्वारा सोम पृथ्वी पर लाने के वृतान्त को जलवृष्टि का रूपक मानते है।[10] गयाचरण त्रिपाठी के अनुसार श्येन तडित् का प्रतीक है, जो कृष्ण मेघ रूपी लौहपुरों को भेदकर दिव्य सोम

* *Copyright © 2026 by Author's and Licensed by Inspira. This is an open access article distributed under the Creative Commons Attribution License which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work properly cited.*

अथवा आकाशीय जल को पृथ्वी पर लाता है।[11] ऋग्वेद में अनेक स्थलों पर सोम का तादात्म्य चन्द्रमा से स्थापित दिया गया है तथा अनेक मन्त्रों में उसे औषधिपति भी कहा गया है।[12]

यजुर्वेद तैतिरीय संहिता

यहाँ गायत्री, जगती तथा त्रिष्टुप छन्दों द्वारा पक्षी के रूप में उड़ कर सोम को आकाश से लाने के प्रयत्न को रोचकता पूर्वक वर्णित किया गया है। चतुर्दश अक्षरों वाली जगती सोम के लिए उड़ी किन्तु वह मात्र पशु व दीक्षा ला सकी तथापि उसके दो अक्षर नष्ट हो गये और वह मात्र 12 अक्षरों की रह गई। त्रिष्टुभ भी तेरह अक्षर के साथ उड़ा किन्तु वह केलव दक्षिणा व तप को ही ला सका, सोम नहीं। उसके भी दो अक्षर नष्ट हो गये। गायत्री अजस्त्र ज्योति के साथ केवल चार अक्षरों सहित उड़ी । वह सोम को भी ले आयी तथा जगती व त्रिष्टुभ के शेष चार अक्षरों को भी। इस प्रकार वह आठ अक्षरों वाली हुयी।[13] बाद में गायत्री के द्वारा लाये हुए सोम को गन्धर्व विश्वावसु चुरा ले जाता है।[14]

पाठक संहिता

इस संहिता में यह आख्यान तैतिरीय संहिता के ही समान है। यहाँ मात्र एक अन्तर यह है कि यहाँ सुपर्णी से अपनी उन्मत्तता सौन्दर्य से उन्मत्त है। कई सुपर्णो को दासी बना लेती है। तब सुपर्णी छन्दों के पास सहायतार्थ जाती है। तथा आगे की कथा तैतिरीय संहिता के समान है। यहाँ गायत्री द्वारा लाये गये सोम को विश्वावसु द्वारा चुराने का, देवताओं द्वारा स्त्रीकामुक गनधर्वों को स्त्रीरूपा वाक् प्रदान करके सोमा का विनिमय करने का उल्लेख है। बाद में वाक् पुनः देवताओं के पास ही लौट आती है।[15]

शतपथ ब्राहमण में प्राप्त विवरण

सोम आकाश में था देवताओं ने सोचा यह पृथ्वी पर आ जाये तो इससे हम यश करें। उन्होंने दो माया रूपिणी स्त्रियों को उत्पन्न किया। जिनके नाम कद्रू व सुपर्णी थे और जो पृथ्वी एवं वाक् को प्रतीक थी। एक बार उन दोनों में विवाद छिड़ गया कि कौन अधिक दूर तक देख सकती है उन्होंने अपने अपने शरीर की बाजी लगाई । सुपर्णी ने कहा कि इस दृश्यमान जल के पास एक खम्बे के पास एक श्वेत अश्व खड़ा है ,मैं उसे देख रही हूँ क्या वह तुम्हें दिखाई दे रहा है। कद्रू ने कहा मुझे उस अश्व की पूँछ भी दिख रही है। वह खम्बे से लगी हुयी और वायु में हिल रही है। सुपर्णी ने कहा आओ उड़ कर चलें और देखे किसकी बात कितनी सत्य है। कद्रू ने कहा कि तुम्हीं देख कर आओ और बताना कि कौन जीता। सुपर्णी ने जाकर देखा तो वैसा ही पाया। कद्रू जीत गयी। उसने सुपर्णी से कहा कि यदि तुम देवताओं के लिए आकाश से सोम मंगवा दो तो मैं तुम्हें मुक्त कर दूँगी। सुपर्णी ने छन्दों को उत्पन्न किया। गायत्री सोम लेने पहुंची । सोम स्वर्ण निर्मित दो तीक्ष्ण आयुधों क्षुर एवं पणि के मध्य सुरक्षित था । ये आयुध वस्तुतः दीक्षा एवं तप थे। गायत्री ने उन्हें भग्न करके सोम देवों को प्रदान किया। तब सुपर्णी कद्रू के दास्यभाव से मुक्त हो गयी।[16] गायत्री द्वारा लाये गये सोम को सोम का रक्षक गन्धर्व विश्वबसु चुरा ले गया।[17]

एतरेय ब्राहमण में वर्णित विवरण

यहाँ पैसे तो आख्यान शतपथ ब्राहमण के ही समान है परन्तु यहाँ कद्रू तथा सुपर्णी का उल्लेख नहीं आया है। स्वयं देवता ही छन्दों से सोम राजा को लाने के लिए कहते है। यहाँ जगती सोम लेने जाते समय तीन अक्षरों की बताई गयी है। जो आधे रास्ते तक जाने पर थक कर तीन अक्षर छोड़ एकाक्षरा होकर दीक्षा व तप लेकर लौटती है। त्रिष्टुप भी एक अक्षर छोड कर तीन अक्षरों की होकर दक्षिणा लेकर लौटती है तथा सोम के रक्षकों को डराकर अपने पंजे व मुख में सोम राजा को तथा अन्य छन्दों द्वारा छोडे गये अक्षरो को भी सम्यक रूप से पकड़कर आ जाती है तथा देवताओं को भी सोम प्रदान करती है। देवता इसका प्रयोग प्रातः मध्याह्न व सायंकालीन यज्ञ में नियमानुसार करने लगे। यहां भी सोम लाते समय सोमरक्षक गन्धर्व कृशानु द्वारा गायत्री पर बाण छोड़ने की बात आयी है। जिससे उस पक्षी रूप गायत्री का एक नाखून फटता है।[19]

महाभारत में प्राप्त विवरण

महाभारत में सोम विषय वर्णन विस्तृतरूप से उपलब्ध है एवं इसे अन्य प्रमुख कथाओं में इस प्रकार मिश्रित किया है जनमेजय के नागयज्ञ में ही महर्षि व्यास के शिष्य वैशम्पयन महाभारत की कथा सुनाते हैं। उस नागयश की भूमिका के रूप में ही उक्त आख्यान आया है। महर्षि कश्यप की तेरह पत्नियों में से कद्रू व विनता क्रमशः सांपों व पक्षियों की माताऐं हैं।[20] एक बार अमृतमन्थन से निकले अश्व उच्चैश्रावा को देखकर विनता कद्रु से कहती है कि इस अश्व का वर्ण पूर्णतः श्वेत है। कद्रु उसकी इस बात को नहीं मानती। उसके अनुसार उसकी पूंछ अवश्य ही कृष्ण वर्ण की हैं दोनों आपस में एक दूसरे को दासी बनाने की शर्त लगाती हैं जब कद्रु को पता लगता है कि अश्व की पूंछ भी श्वेत है तो वह हार जाने के भय से अपने एक सहस्त्र पुत्रों (नागों) को उच्चैश्रवा की पूंछ से लिपट जाने का आदेश देती है। जिससे वह काली प्रतित हो। जो पुत्र उसकी आज्ञा नहीं मानते वह उसे उस यज्ञ में भस्म हो जाने का श्राप देती है।[21] दूसरे दिन दोनों समुद्र लांघकर अश्व को देखने पहुंचती है। कृष्णवर्णा पूंछ देखकर विनता हार जाती है व कद्रु उसे अपनी दासी बना लेती है।[22] इसी बीच विनता के पुत्र महापराक्रमी, वेगवान एवं अग्नितुल्य तेजस्वी व बलशाली गरूण का जन्म होता है। [23] वे अपनी माता विनती को कद्रु के दास्यभाव से मुक्त कराने के लिए सर्पों की आज्ञा से अमृत लाने का विचार करते है। समुद्र मंथन से निकला हुआ अमृत स्वर्ग में सुरक्षित था। गरूण के स्वर्ग में पहुचने पर इन्द्र व्याकुल हो जाते है तथा अनेक रक्षकों को सावधानीपुर्वक अमृत की रक्षा करने का आदेश देते है। उन रक्षकों में लष्टा प्रमुख है[24] गरूण सभी अमृत रक्षकों को नष्ट करके अमृत लाने में तथा अपनी माता विनता को सर्पों कि माता कद्रु के दास्य भाव से मुक्त कराने में सफल हो जाते है।[25] उस अमृत को महाभारत में अनेक स्थलों पर सोम कहा गया है।[26] जो इसका सीधा सम्बन्ध वैदिक साहित्य से जोडता है। लौकिक साहित्य में सोम लुप्त प्रायः हो चुका है। अतः सोम शब्द प्रायः चन्द्रमा का वाचक हो गया है।

नागों को अमृत पात्र देकर जब विनता दास्य भाव से मुक्त हो जाती है तो गरूण की सलाह से इन्द्र उस अमृत को चुरा ले जाते है क्योंकि गरूण व इन्द्र यह नहीं चाहते थे कि विषधर सर्प अमृत पीकर अमर हो जाये।[27]

महाभारतकार द्वारा मूल कथानक में किये गये परिवर्तन

- वेदोक्त श्येन को महाभारत में महर्षि कश्यप तथा विनता के पुत्र गरूण बताया गया है।
- शतपथ ब्राम्हण में कद्रु व सुपर्णी को क्रमशः पृथ्वी एवं वाक का प्रतीक माना गया है। महाभारत उनका परिचय महर्षि कश्यप की तेरह पत्नियों में से दो कद्रु व विनता के रूप में देता है, जो क्रमशः सर्पों व पक्षियों की माता है।
- शतपथ ब्राम्हण में कद्रु व सुपर्णी जिस अश्व के बारे में शर्त लगाती है वह एक यज्ञीय अश्व है, जबकि महाभारत का अश्व समुद्र मन्थन से निकला उच्चैश्रवा अश्व है।
- शतपथ में कद्रु के स्वभाव में छल नहीं है अपितु शर्त के अनुसार हारने पर ही सुपर्णी को कद्रु की दासी बनना पड़ा। कद्रु वहाँ अपने अथवा अपने पुत्रों के लिए नहीं अपितु देवताओं के लिए सोम मंगवाती है जबकि महाभारत में कद्रु जीतने के लिए छल का सहारा लेती है।
- वेद व ब्राम्हणों में सोम देवताओं के लिए ही आकाश से पृथ्वी पर लाया जाता है जबकि महाभारत में सर्पों कि माता कद्रु अपने पुत्रों के लिए सोम मंगवाती है।
- शतपथ में सुपर्णी छंदों को उत्पन्न करती है जो कि आकाश से सोम लाकर देवों को प्रदान करते है। जबकि महाभारत में विनता गरूण को उत्पन्न करती है जो कद्रु को अमृत लाकर देते है और अपनी माता विनता को उनके दास्य भाव से मुक्त कराते है।

- ऋग्वेद में सोम कि सुरक्षा लौह दुर्ग में बतायी गयी है। शतपथ ब्राम्हण में सोम के रक्षक आयुध क्षुर व पवि को क्रमशः दीक्षा व तप कहा गया है जबकि महाभारत में सोम के रक्षक भयंकर विषधर सर्प, भयंकर अग्नि व प्रमुख रक्षकर त्वष्टा बताये गये है।
- सोम को परम व्योम से लाते समय वेद व ब्राम्हणों में पक्षी रूप गायत्री व श्येन पर कृषाणू नामक गन्धर्व प्रहार करते है। महाभारत में यह कार्य इन्द्र करते है।

वैदिक सोम–तत्व विषयक वर्णन में महाभारतकार द्वारा किए गये परिवर्तनों के प्रयोजन

ऋग्वेद में प्रायः सभी तथ्यों को अत्यन्त सुक्ष्म रूप में प्रस्तुत किया गया है। अतः वहां कोई भी व्याख्यान विस्तार प्राप्त नहीं कर पाये है। जिस प्रकार ब्राम्हण ग्रन्थ कर्मकाण्ड प्रधान होने के कारण वेदोक्त मन्त्रों का अर्थ यज्ञपरक शैली में करते है तथा ऋग्वेदादि के स्तुति प्रधान मन्त्रों का यज्ञ प्रधान बना देते थे उसी प्रकार महाभारत में भी वेद विहित तथ्यों कि व्याख्या अथवा उनका विस्तार करते समय महाभारतीय अन्य तथ्यों से उनका सामन्जस्य स्थापित करने के लिए उन्हें उसी रूप में ढाल दिया जाता है। वेदोक्त वर्णन में महाभारतकार जो भी परिवर्तन करते है वेद किसी न किसी रूप में उन परिवर्तनों को सहमति प्रदान करते है।

- ब्राम्हणों में कद्रु व सुपर्णी को क्रमशः पृथ्वी व वाक स्वरूपिणी बताया गया है। महाभारतकार इन दोनों को क्रमश सापों व पक्षियों कि माता बताकर वेदोक्त तथ्य का अनुसरण करते प्रतीत होते है। कद्रु पृथ्वी स्वरूपा है व सर्पों कि जननी है क्योंकि सपों का जन्म पृथ्वी में ही होता है उसी प्रकार सुपर्णी को वाक् स्वरूपा कहा गया है। भारतीय दर्शन के अनुसार शब्द आकाश से सम्बद्ध होने के कारण पक्षियों कि माता है।
- वेदोक्त सुपर्णी वाक् की प्रतीक है वाक् आकाश का गुण है तथा आकाश का गुण विनम्रता है संभवतः इसी कारण महाभारतकार उसे विनता नाम देते है।
- सोम अथवा अमृत और कद्रु नहीं अपितु वेदों का सार तत्व ही है वेद रूपी अथाह समुद्र का सुक्ष्म स्वाध्याय रूपी मथानी से मथने पर जिस ज्ञान की प्राप्ति होती है वह अमृतत्व प्रदान करने वाला होता है। इस सार तत्व का ज्ञान असाधारण उपायों द्वारा ही संभव है। संभवतः वेदों में इसी तत्व को सोम व महाभारत में अमृत कहा गया है।
- वेदों का ज्ञान प्राप्त करने के लिए देवताओं व ऋषियों आदि के समान सात्विक प्रवृतियों का होना आवश्यक है। दानवी प्रवृतियों को इसका ज्ञान साधारण स्वाध्याय से प्राप्त नहीं हो सकता। अतः वे इसको चुराने के प्रयास करती है। महाभारत में सर्पो की माता कद्रु द्वारा अपने पुत्रों के लिए अमृत को मंगवाने का प्रयास इसी प्रकार का दृष्टान्त प्रस्तुत करता है।
- ब्राम्हण ग्रन्थों में विश्वावसु व कृशानु द्वारा सोम का हरण वेदार्थ के हरण के के प्रयास को दर्शाता है। जबकि महाभारत में नागों के पाश से इन्द्र द्वारा सोम का हरण वैदिक शाखाओं के लोप को प्रदर्शित करता है क्योंकि पृथ्वी पर जैसे जैसे दानवी प्रवृतियों का आधिपत्य हुआ त्यों त्यों वेदाध्ययन का महत्व घटता गया परिणामस्वरूप बहुत सी वेदिक शाखाओं का लोप हो गया । जिसका यहां प्रतीकात्मक वर्णन किया गया है।

सन्दर्भ गन्थ सूची

1. सोमस्येव मौजवतस्य भक्षों................। ऋृ. 10–34–1।।
2. अत्रैव वो पि न ह्याम्युभे आर्लो इव ....। ऋृ. 10–166–3।।
3. पद यदस्य परमें व्योमन् यतो विश्वा................। ऋृ. 9–87–15।।
4. श्येनों यदन्धी अभरत् परावतः................। ऋृ. 09–68–6।।

5. य ते श्येन पदाभरत् तिरों रजांस्यस्पृतम्................| ऋृ. 8–8–9||
6. शतं म पुर आयसीर रक्षन्नध श्येनों................| ऋृ. 4–27–1||
7. अव यच्छयेनों अस्वनीदघ द्योर्पि................| ऋृ. 4–27.3–4||
8. आभ्य दिवो मातरिश्वा जभामामथनादन्य................| ऋृ. 1–93–6||
9. पतिः सिन्धुनाडभवनत्................| ऋृ. 9–15–6||
10. ब्लूमफील्ड, रिलीजन आफ द वेदा पृ. 146
11. गयाचरण त्रिपाठी, वैदिक देवता. पृ. 627
12. अयं वामद्रिभिः सुतः सोमोनरा वृष्णवसु................| ऋृ. 8–22–8||
    सोम नमस्य राजानं यो जरो वीरूधां पति................| ऋृ. 9–114–2||
13. तैत्तिरीय संहिता 6.1.5
14. त सोममाहियमाणे गन्धर्वो विश्वावसु पर्यमुष्णात्| तै.सं. 6.1.6
15. विश्वावसुस्य तिस्त्रों रात्रीरूपहतो वसत् ....| का.सं. 24.1
16. दिवि वै सोम आसीत्| तं देवा आकमयन्त| श.ब्रा. 3.6.2.15
17. तस्या आहरन्त्यै गन्धर्वों .... | श.ब्रा.3.2.4.2
18. सोमो वै राजाडमुष्मिल्लोके आसीत्, तं देवाश्च ऋृषयश्वाभ्यधायन् कथमयत्स्मात् सोमो.........| एत.ब्रा.3.3.1
19. तस्या अनुविसृज्य कृशानु सोमपालः.........| एत.ब्रा.3.3.1
20. महा. 1.16.5–24
21. महा. 1.20.4–9
22. महा. 1.22.3–7
23. महा. 1.23.5–29
24. महा. 1.32.1–25
25. महा. 1.33.1–11
26. न कार्य यदि सोमेन मम् सोमः प्रदीयताम् ....| महा. 1.33.8
27. महा. 1.31.1–19

सहायक गन्थ सूची

1. ऋृग्वेद संहिता, (सायण भाष्य सहित), वैदिक संशोधन मण्डल 1933–46, पूना|
2. तैत्तिरीय संहिता, (भट्ट भास्कर, सायण भाष्य सहित), वैदिक संशोधन मण्डल 1970–81, पूना|
3. माध्यंदिन संहिता, (सायण भाष्य सहित), मोतीलाल बनारसी 1971 ई. दिल्ली|
4. काठक संहिता, (व्याख्याकार सायण भाष्य), स्वाध्याय मण्डल 1958–60, पारडी|
5. एतरेय ब्राम्हण, (सायण भाष्य सहित) सम्या. एवं अनु. डॉ. सुधाकर मालवीय, तारा प्रिंटिंग वर्क्स 1980
6. शतपथ ब्राम्हण, (सायण भाष्य सहित), चौखम्बा संस्कृत सीरीज 1964, वाराणसी|
7- Bloomfield, Maurice, The Religion of Vedas, Indological Book House, Delhi 1972
8. गयाचरण त्रिपाठी, वैदिक देवता–उद्भव और विकास, भारतीय विद्या प्रकाशन दिल्ली, 1981

❑❑❑